सत्य साहित्य

New Series
Vol. 1 • No. 3
July 2013

Satya Sahitya, a Quarterly Newsletter of **Shree Ramsharnam International Centre**, New Delhi

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

**Let us sing the Omniscience of Shree Ram, the Supreme Soul,
who is the Fountainhead of all animate and inanimate energy of the cosmos**

No. 303

चरणों में पड़ी पुकारे माँ, इक बार तो मोहे बुला तो सही।
तुम्हें छोड़ के बालक जाए कहाँ, मैया तू इतना बता तो सही।
(1) सुखदायिनी तू जगतारणी माँ, दुःख नाशिनी पाप निवारिणी माँ
तू करुणामयी भवतारणी माँ, इक बार उठा अब अंग लगा,
तू प्रेम में लोरी गा तो सही, गा तो सही। चरणों ...
(2) रूप नहीं गुण एक न माँ, मेरे जन्म अनेक हैं माँ।
बस तू ही मेरी टेक है माँ। तुम अन्तर्यामी हो मैया,
भव सागर पार लंघा तो सही, लंघा तो सही। चरणों...
(3) मुझे अबला जान के छोड़ न माँ, मेरे दोष देख मुख मोड़
मुझसे यह नाता तोड़ न माँ, तुम जननी हो माँ मेरी हो, माँ।
इतना कह हिए लगा तो सही, लगा तो सही। चरणों...
(4) पल्ला पकड़ा माँ तेरा, आ न आ, तेरी मर्जी
इक बार नजर भर देख तो ले, बुला न बुला, तेरी मर्जी
जब हम ही न होंगे मैया तो, दामन किससे छुड़ाओगी,
जब ममता उमड़ेगी तेरी, तो ममता किसे लुटाओगी।
चरणों में पड़ी पुकारे माँ ---

परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- 'प्रेम सन्देश' (परम पूजनीय महाराज जी को श्रद्धांजलि, 2 जुलाई 2013)
- व्यास पूर्णिमा
- परम पूजनीय महाराज जी के श्रीमुख से समाधान
- Calender
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- 'अनुभूतियाँ'
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

'प्रेम सन्देश'

परम पूजनीय सर्वप्रिय, सदा वन्दनीय महाराज जी,

सप्रेम शत् शत् नमन,

आज 2 जुलाई की मंगलमयी बेला है। एक वर्ष पूर्व आपने नीलधारा पर सहस्त्रों साधकों के समक्ष दोनों बाँहों को ऊपर आकाश की ओर फैलाया, मानो परमेश्वरी माँ का आवाह्न कर रहे हों कि वे आपको अपनी गोद में ले लें। आपकी शिशु समान प्रार्थना ऐसी उत्कट थी कि माँ ने भी अति लालायित होकर उस पुकार को सुना और आपको अपनी कोख में ले लिया।

ऐसा लगा मानो घोर अन्धकार छा गया।

धीरे–धीरे, तत्पश्चात् समझ में आया कि दरअसल आपका और परमात्मा का मिलन हो गया है और आप सीमित शारीरिक रुप को छोड़ कर असीम परमेश्वर के साथ सर्वव्याप्त हो गए हैं। महाराज जी ! हमें स्मरण है, आप अपने प्रवचनों में कहा करते,"सन्त की मृत्यु मंगलमयी होती है" और, आप हम सबको स्मरण करवाते कि एक दिन हम सभी को अमरत्व प्राप्त करना है। आपने अपने रुप बदलने से और अपने महानिर्वाण से प्रत्यक्ष दिखा दिया कि अमरत्व क्या होता है। साधकों की गुरुतत्व की अनुभूतियों से और अनेक स्थानों से सुन्दर व सफल सत्संगों के समाचार मिलने से यही प्रतीत होता है कि आपने तो केवल अपना 'हैड क्वार्टर' बदला है, आप तो शाश्वत रुप धार कर और सक्रिय हो गए हैं।

महाराज जी ! हमें विशेषकर एक साधक की अनुभूति याद आ रही है। उन्होंने स्वप्न में आपको कहा कि आप हमें सत्संग में प्रवचन देते हुए, धुन गाते हुए और नृत्य करते हुए भी दिखाई देते हैं, परन्तु हम अपने मन की बात किसको सुनाएँ ? इसपर आपने उत्तर दिया,"मैंने अपने प्रत्येक शिष्य को इतना सशक्त कर दिया है कि वह स्थिर बना रहेगा और गुरुजनों के बनाए मार्ग पर चलता रहेगा।"

महाराज जी ! हम सब आपके बच्चे हैं, आप ही सदा की तरह हमारा हाथ पकड़ कर मार्गदर्शन करते रहें। हम सबको सदा क्षमा करते रहें। आप हमें अच्छा इन्सान बनाएँ, मीठी वाणी दें, निर्मल बुद्धि दें और दिव्य करणी दें। हे गुरुदेव ! हम आपकी चरण शरण में हैं, हमें अन्दर के शत्रुओं से बचाए रखिएगा। हमारी लाज रखिएगा।

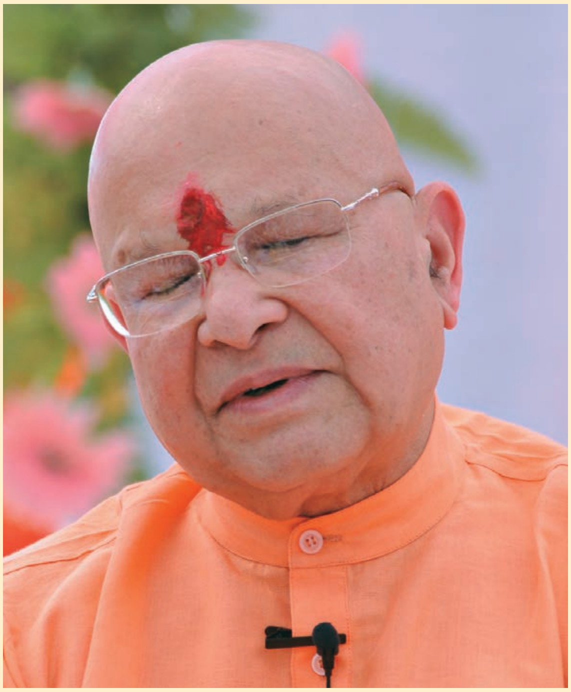

जाना जाना डाकिए, ले जाना सन्देश।
पतियाँ देना प्रिय को, कहना कथन विशेष।।

तेरे भजन सुपाठ का, जाय पहुँच सन्देश।
वह तो जानन हार है, पूर्ण पुरुष महेश।।

प्रेमी के सन्देश को, सुने प्रेम का धाम।
पाय प्रेमी सुप्रेम को, जपे प्रेम से नाम।।

रात दिवस चलता रहे, बिना तार का तार।
बतियाँ होवें मधुरतम, आय शुभ समाचार।।

परमेश्वर का आश्वासन

उस पद का सन्देश है, सुन मेरे जन आज।
तेरे जप तप ध्यान से, हो तुष्ट महाराज।।

कृतज्ञता

उसका रहूँ कृतज्ञ मैं, मानूँ अति आभार।
जिसने अति हित प्रेम से, मुझ पर कर उपकार।।

दिया दीवा सुदीपता, परम दिव्य हरि नाम।
पड़ी सूझ निज रुप की, जिस से सुधरे काम।।

कर्म धर्म का बोध दे, जिस ने बताया राम।
उस के चरण सरोज पर, नत शिर हो प्रणाम।।

– श्री रामशरणम् परिवार की ओर से

Message of Param Pujaniya Swami ji Maharaj on Vyas Purnima, 1955

||Sri Ram||

Dehradun
20.06.1955

Esteemed Saadhak,

Loving Blessings!

The Vyas-Poornima will soon be upon us: On this auspicious occasion, I convey the following message, through your goodself, to all the devotees . . .

"The Omnipotent, the One and Only, who is beyond compare[second to none], the Supreme Being, the Benevolent, the Compassionate and God of Gods, Sri Ram is our ultimate aim: He is verily the Supreme Spiritual Guide: the same Supreme Spiritual Guide who divinely manifests in the Absolutely Pious Ram-Naam: The soulful chanting of this 'Naam', its recitation, remembrance, meditation, on this occasion is the true worship, the profoundest obeisance of the Supreme Guru: Through such devotion upon the 'Naam' are received numerous blessings: all impurities are eradicated; life becomes pious; the spiritual energy (life-giving force in all of us) awakens; and positive/wholesome emotions spontaneously generate in the heart of their own accord. On this occasion, worshipping the One who is Supremely Reverential is a sure way of attaining one's true well-being: This day must be commemorated with heartfelt-emotions and deepest devotion."

Through my wishes and blessings, I shall also be verily present in your soulful remembrance and adoration. May Sri Ram's beneficence be always upon you!

Wishing well for all of you,

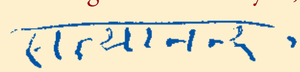

(English translation from *Pravachan Piyush* by Param Pujaniya Swami Satyanand Ji Maharaj, Delhi, Samvat 2065, pp. 24-25.)

व्यास पूर्णिमा की महिमा एवं संदेश

हमारे गुरुजनों के अनुसार व्यास पूर्णिमा का पावन दिवस साधना के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने संदेशों में बार–बार परम गुरु की महिमा का वर्णन किया है और साथ ही यह बताया है कि व्यास पूर्णिमा – साधना, सिमरन एवं गुरुजनों के उपदेशों को व्यवहार में उतारने का दिन है। व्यास पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हमारे गुरुजन सदैव हमें भक्ति और उपासना का संदेश देते हैं। यहां परम पूजनीय प्रेम जी महाराज एवं परम पूजनीय महाराज जी ने परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के उपासना के मार्ग, उनके उपदेशों का मर्म और उनके अति विशिष्ट अलौकिक व्यक्तित्व का स्मरण कराया है।

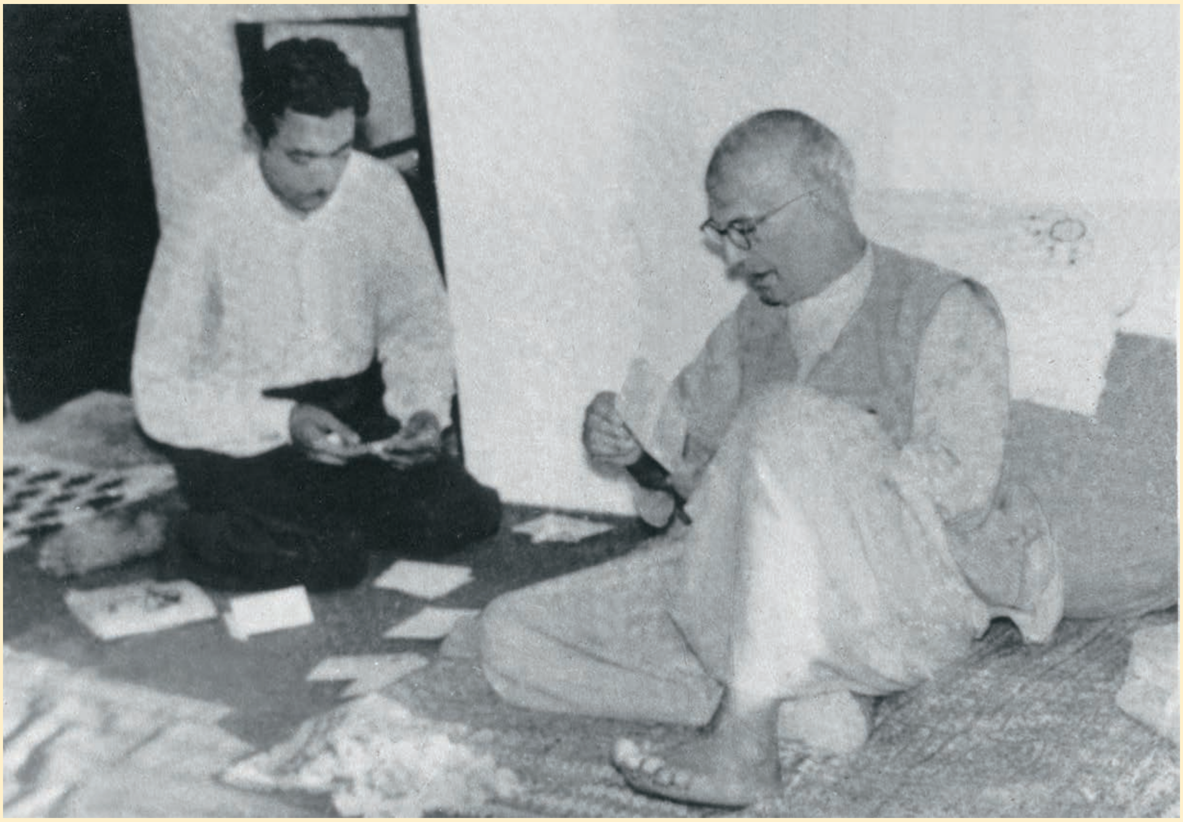

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज एवं परम पूजनीय प्रेम जी महाराज

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से

प्रवचन, दिनांक 14.7.1962

अध्यात्मवाद में व्यास पूर्णिमा का पर्व एक विशेष महत्व रखता है। इस शुभ दिन की महिमा रहस्यमय है, आदि काल में इसी दिन जगद्गुरु महाऋषि व्यास द्वारा संसार में ज्ञान का संचार हुआ जो अब तक नवतर है और भविष्य में भी नदी के प्रवाह की तरह सदा ही चलता रहेगा। सब सज्जन सन्त व्यास के आभारी हैं और इस शुभावसर पर उनका ध्यान करके उनको बार–बार नमस्कार करते हैं, जिन्होंने इस ज्ञान गंगा में स्नान किया है वह भी नमस्कार के योग्य हैं – उनके सम्मुख मस्तक अपने आप ही झुक जाता है।

व्यास पूर्णिमा को कई मतों के मानने वाले गुरु पूर्णिमा भी कहने लगे हैं और परमेश्वर मान कर ही गुरु को पूजते हैं, बहुत द्रव्य भी इस दिन गुरु के चरणों पर वार देते हैं।

जब कोई किसी बाग में जाकर उसके फूल पौधों को देख कर प्रसन्न होता है। उसके मन में जो है उसको देख कर वह आप ही प्रसन्न होता है । इसी प्रकार किसी ने कोई बांध बांधा है, उस इंजीनियर का नाम याद रहता है। इसी प्रकार यह हमारी फुलवारी है जो महाराज (परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज) ने लगाई है। हम सबको अपना जीवन राम को अर्पण करना है। महाराज की अपार कृपा से सबका इस ओर रुख हुआ है। जिन लोगों का इस ओर रुख हुआ है वह सब उनकी, श्री महाराज की कृपा ही तो है। यह सब फुलवारी महाराज की ही देन है। यह सेवा सबसे उत्तम सेवा है कि किसी भटकते हुए को रास्ते पर लगा देना। यह हमको अपना सौभाग्य समझना चाहिये।

सबकी सेवा करने किस प्रकार महाराज जी यहां आये, उन्होंने क्या क्या कार्य किये सब रहस्यमय है जिससे अधिक लोग प्रभावित हुए। श्री महाराज ने दूसरों की अन्तरात्मा जगाने के लिए जाने कितनी मुसीबतें सहीं। यह शरीर बड़ा मूल्यवान हैं केवल अन्न खराब करने के लिये नहीं होना चाहिये। गुरु महिमा का महाराज जी की दृष्टि में विशेष महत्व था।

संसार में अनेक महापुरुष हुआ करते हैं। परन्तु महाराज एक सर्वगुण सम्पन्न महात्मा थे। एक छोटा सा स्त्रोत जिसके पानी में शुद्धता न हो गंगा जल में मिल जाता है वह गंगा जल ही हो जाता है। एक छोटा सा शरीर जो राम नाम में मिल जाता है वह राम का ही हो जाता है। थोड़े से उपकार करने वालों को भी बड़ी भलाई दी जाती है। महाराज जी ने सारे संसार के लिये ही सेवा की, मंगल कामना की। उन्होंने स्वार्थ भाव को त्याग कर जनकल्याण किया। जिस प्राणी को ऐसे संत के दर्शन हुए वह अपने को बड़भागी समझता है। महाराज जी सब पर करुणा दृष्टि करते रहे। प्रत्येक को महाराज जी की तरह क्षमाशील बनना चाहिये। प्रत्येक को अपनी कमजोरी देखकर उसे दूर करने में भरसक प्रयत्न करना चाहिये।

क्षमाशीलता हमारा परम लक्ष्य होना चाहिये। जिस का अविवेक, मोह दूर हो गया है जिसका आत्मज्ञान जाग गया है वह परमेश्वर के नज़दीक है। हमें महाराज जी के प्रत्येक आदेश का पालन करना चाहिये। महाराज ने हमें कितना आसान, सरल एवं सस्ता रास्ता राम नाम का दिया है उसे हमें पालन करना चाहिये। परमेश्वर सदा आपके साथ है। ऐसा समझते हुए हमें महाराज के आदर्शों व उनके बताये नियमों का पालन करते रहना चाहिये। यह जप, आराधन महाराज जी की कृपा है। इस जप, आराधन आदि के बारे में आपको कभी अहंकार नहीं करना चाहिये। जितना अधिक हम आराधन करेंगे तभी हमको वह रस मिलेगा जो आनन्दमय है।

सद्गुरु की महिमा

'सद्गुरु वह जिनका प्रत्येक व्यवहार ज्ञान और भक्ति से भरा हो। सदशिष्य को पवित्र जन्म देवे। सद्गुरु–शिष्य का प्रेम विशुद्ध–निस्वार्थ है। जो परमात्मा को सर्वकाल, सर्वदेश अनुभव करता है–वह सद्गुरु। शिष्य के दुःख का हरण करे, जन्म–मरण के त्रास से छुड़ाये। गुरुकृपा से संसार की विस्मृति और कृपा से मन शुद्ध होता है। संत वह जो मन को सुधारे। सच्चा संत संपत्ति, संतति, संसार–सुख का आशीर्वाद नहीं देता–संत विषयानंद नहीं भजनानन्द(सत्संग) देते हैं। संत सम्मति देते हैं। सद्गुरु शिष्य का स्वभाव सुधारते हैं। जितेन्द्रिय भजनानन्दी संत की सेवा से अनायास ज्ञान हो जाता है।' ■

परम पूजनीय महाराज जी के व्यक्तिगत लेखन में से

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज एवं परम पूजनीय विश्वामित्र जी महाराज

परमात्मने श्री रामायः नमः
व्यास पूजा के उपलक्ष्य में संदेश

विश्वामित्र

14 जुलाई, 1940 के शुभ सन्देश में परम पूज्य बाबा(स्वामी सत्यानन्द जी महाराज) फरमाते हैं : व्यास पूजा का पुण्य पर्व हमारे धर्म में, आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिये नियत है। अर्थात परम श्रद्धेय स्वामी जी हमारे आदि गुरु हैं और हम सब उनके शिष्य।

उन्होंने कोई सांसारिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किया, इस लिये बाबा तो बाबा ही हैं।

स्वामी जी ने कभी अपने आप को गुरु नहीं कहा और न ही चाहा कि कोई उन्हें गुरु माने, कभी अपने पाँव को छूने नहीं दिया, कभी अपनी पूजा नहीं करवाई, कभी अपने निर्वाह के लिये किसी से कुछ माँगा नहीं, यहां तक कि गुरु मन्त्र देने के बाद भी गुरु दक्षिणा के रुप में किसी भी प्रकार की भेंट स्वीकार नहीं की, अपितु यही प्रण लिया कि साधक नाम का जाप–ध्यान नित्य करते रहेंगे, कभी छोड़ेंगे नहीं। ये सब कुछ उन्होंने अन्त समय तक निभाया, अतः बड़े गर्व के साथ कहा करते, "जब सत्यानन्द शरीर छोड़ेगा, बैंक में एक पैसा, जमीन का एक टुकड़ा या

चढ़ावे का एक भी बादाम उसके पास नहीं मिलेगा।'' ऐसा करके पूज्य बाबा तो अपनी गुरुआई गौरवपूर्ण निभा गये, क्या हम शिष्यों ने भी अपनी शिष्यता निभाई ? उन्हीं के अनुरुप शिष्य बन सके या नहीं ? अपने अपने गरेबान में झांक कर देखें हम कहाँ हैं ? कैसे हैं हम ? Where do we stand? Evaluate करने का दिन है। कैसे शिष्य हैं हम ? शिष्य उसी को कहते हैं, जो गुरु की आज्ञा के अनुसार चलता या आज्ञा में रहता है। तनिक अपने आप को पूछ कर देखें, क्या उन की आज्ञा पालन कर रहे हैं ? एक ही बात कही थी, उन्होंने कि राम नाम का जाप करना, ध्यान में बैठना, हम वह भी नहीं कर रहे। दीक्षा के समय वायदा ऊँचा बुलवा कर लिया जाता है। बाबा कहते, ''मैं कभी आज्ञा नहीं देता, मैं परामर्श देता हूं।'' आज का दिन यह याद करने का दिन है।

कोई कहता, मैंने इतना जाप किया है, कहते और अधिक जाप करो, किसी को कहते, अब आप ध्यान में बैठा करो या किसी को कहो कि आप का जाप, ध्यान ठीक चल रहा है, अब आप गीता जी का पाठ किया करो। दोनों गुरुजनों ने हर समस्या के समाधान हेतु जप एवं ध्यान पर ही बल दिया है। क्या हम उन की आज्ञा मानते हैं ? क्या हम गुरुजनों को समर्पित हैं, या भटकना अभी भी बनी हुई है, यदि ऐसा समर्थ गुरु पाकर भी संतोष नहीं मिला तो यह भटकाव इस जिन्दगी में तो कभी खत्म नहीं होने वाला।

क्या स्वयं राम नाम जाप–ध्यान कर रहे हैं तथा औरों को भी जाप–ध्यान की प्रेरणा दे रहे हैं? क्या स्वामी जी के ग्रन्थों का स्वयं अध्ययन कर रहे हैं तथा औरों को स्वाध्याय के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं ? क्या दूसरों के सुख–दुःख में भागी बनते हैं या अपने आप में मस्त हैं ?

क्या समर्पित हो गये हैं या नहीं ? Are you dedicated to Guru ? क्या अभी तक मन स्थिर हुआ कि नहीं? क्या बुद्धि स्थिर हुई कि नहीं, क्या गुरु पाकर जो पाना चाहिए था पाया या नहीं ? क्या मन उनके श्री चरणों में अर्पित कर दिया या अभी अपने पास ही रखा है? तभी कामना, तृष्णा, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या–द्वेष–घृणा आदि दोषों से छुटकारा नहीं पा सके – क्योंकि भण्डार तो भरा पड़ा है। आप तो शरीर धुलवा रहे हो, अपना भीतर अर्पित ही नहीं किया।

कहे नानक *गुरु बन्धन काटे*, हम जैसे भी हैं सम्भालियेगा। कैसे काटे, क्या हम काटने देते हैं ? क्या अभी तक गुरु महाराज से लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये ही आशीर्वाद मांग रहे हैं, या अलौकिक सुख की खोज के लिये भी तड़प पैदा हुई है ?

क्या हम खून चूसने वाले शिष्य तो नहीं ? ऐसा शिष्य, शिष्य कहलाने के योग्य नहीं। जो यह चाहते हैं, जब भी मिलना चाहे, मिले। अपने अनुसार गुरु को चलाने वाले शिष्य, न कभी इन से कुछ पा सकेंगे, न परमात्मा से पा सकेंगे। जो रक्त चूसने वाले, मनमानी करने वाले है, इनसे कुछ पा नहीं सकेंगे।

महात्मा बुद्ध के चचेरे भाई आनन्द ने शिष्यत्व स्वीकार करने के लिये चार शर्तें रखीं।

१. जहाँ भी आप रहोगे मैं भी वहीं रहूंगा।

२. जहाँ भी आप जाओगे मैं भी वहीं जाऊंगा।

३. जिस वक्त भी मैं मिलना चाहूंगा, आपको मिलना होगा, आप यह नहीं कहोगे कि आप के मौन का समय है।

४. जिस वक्त भी किसी को मिलाना चाहूंगा आप यह नहीं कहोगे, एकान्तवास का समय है।

महात्मा बुद्ध ने तो ये शर्तें सारी जिन्दगी निभाईं, आनन्द उमर भर बड़े भाई होने के अभिमान में रहे और कुछ न पा सके।

यह भाई–बहन, पिता–पुत्र, ससुर–बहू का मार्ग नहीं है, यह तो गुरु–शिष्य का मार्ग है। यह दिन यही सम्बन्ध याद करने का दिन है।

अच्छा साधक अपने पात्र को पाने के लिये, ग्रहण करने के लिये सदा तैयार रखता है। क्या हम ऐसे हैं ? आनन्द जैसे तो बहुत मिल जाते हैं। शिष्य नहीं मिलता। शिष्य बनना ही मुश्किल है। गुरु की परिभाषा है – गुरु वह जो प्रत्येक शिष्य को गुरु के समान ऊंचा उठा दे, संत वह जो सब को संत बना

दे, साधु बना दे। भीतर से हाथ रखता है और बाहर से चोट मारता है।

स्वामी जी महाराज आपका धन्यवाद शब्दों में नहीं किया जा सकता, जो याद दिला रहे हो, क्या हम अच्छे शिष्य हैं ? क्या हम ऐसे हैं कि आप स्वयं कह सको कि यह है मेरा अपना ? बाबा कोई तो ऐसा शिष्य बनाओ, जिसे आप अपना कह सको। ऐसे तो बहुत मिलते हैं, जो कालख पोतने वाले होंगे।

कृपा करो हम पर, हम तो प्रशंसा के दास हैं, यश–मान के दास विषय–वासना के दास हैं। रक्षा करो – त्राहिमाम, त्राहिमाम। पाहिमाम, पाहिमाम। इन राक्षसों से प्रभु आप ही बचा सकते हैं। हनुमान जी जैसे शिष्य ने भी राम जी से यही कहा, यह काम आप ही कर सकते हैं। राम जी ने कहा,''हनुमान सारी लंका को तो अकेले ही जला कर आ गये थे। तब तो मेरी सहायता मांगी नहीं।'' बहुत अच्छा उत्तर देते हैं हनुमान जी,''प्रभु ! सारी लंका जलाने में तो मैं अकेला ही काफी था। रावण और सभी राक्षसों को मैं मार सकता था परन्तु इस प्रशंसा रुपी राक्षस से तो मैं भी भयभीत हूं। आप ही रक्षा कर सकते हैं। मेरे बस की नहीं।'' हमें तो भूख ही प्रशंसा पाने की है।

आप आशीर्वाद दें बाबा कि हम आपके अच्छे शिष्य बन सकें, नौकर बन सकें, चेरे बन सकें। आशीर्वाद दीजिये।

नमो नमः गुरु देव तुमको नमो नमः।

नमो नमः महाराज तुमको नमो नमः।

आज के इस मांगलिक दिवस पर पुनः बधाई हो, मेरे गुरु महाराज जहाँ जहाँ भी आप के परिवार के सदस्य बैठे हैं, मेरी मंगल कामनायें एवं अपने आशीर्वाद पहुंचाने की कृपा करें। आज का दिन अतिशय मंगलमय हो।

जय जय राम
शुभाकांक्षी

विश्वामित्र
(गुरु पूर्णिमा 13 जुलाई, 2003)

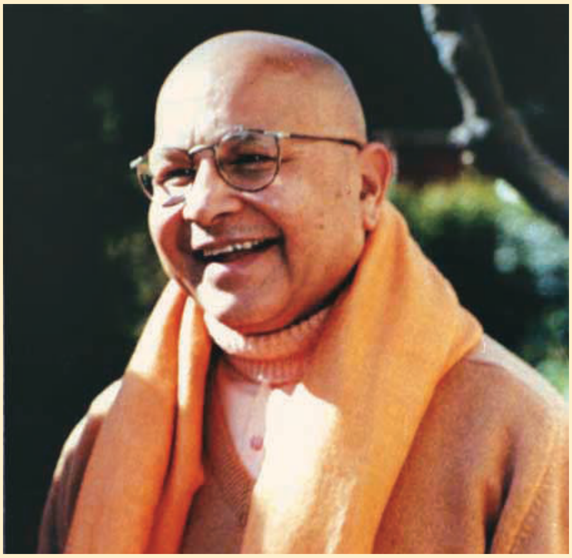

गुरु महिमा गुरु महिमा
अपार महिमा गुरु महिमा।

धन्य हुआ मैं सत्गुरु पाके
सत्गुरु मेरे राम मिला दे।

जीवन दा मैंनू आनन्द आ गया,
जदों दा मैं एह शहनशाह पा लया।

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से

'यहाँ के ही एक डॉ. महाजन हैं। महाराज की उनपर बहुत कृपा है, उन्होंने वह रिसर्च की है जो अभी तक किसी ने नहीं की। अमेरिका से एक्सपर्ट आ–आ कर देखते हैं और हैरान हो–हो कर पूछते हैं कि इसने ऐसी रिसर्च कैसे कर ली। डॉ. महाजन कहते हैं कि उन्हें तो एक आवाज़ आई थी कि ऐसे–ऐसे करो। उन्होंने वैसे ही कर दिया।

राम नाम हमारे कार्यों में सहायता करता है। हमें नाम का आराधन पूरे विश्वास से करना चाहिए।'

(प्रवचन का अंश, 9.12.1972, सायं 7 बजे, एच.ए.यू., हिसार)

Concerning the Householder

Param Pujaniya Maharaj ji in His discourses (pravachans) often spoke about the problems and challenges faced by sadhaks who are householders. The following thoughts have been derived from many of His pravachans and may serve as a guide.

On the possibility of harmonising the householders world and God.

It does not matter whether you live the life of a householder or worldly life, you must fix your mind on God. Thakur (Swami Ramkrishna Parmahansa) used to say: 'Do your work with one hand and touch the feet of the Lord with the other, when you have no work in the world to do, hold His feet fast to your heart with both hands.'

Methods for an individual aspiring for salvation.

One can live safely in the world, if one has *Vivek* i.e. right discrimination- (to know what is right and what is wrong.) and *Vairagya* (non attachment) and along with these we should have intense devotion to God. Other methods are *Satsangati, Simran, Seva, Sadvyavhar, Sanyam* and *Santosh* by which we can get salvation.

1. *Satsangati* - to live in the company of good people or Gurus or attending satsangs.
2. *Simran* - chanting the name of God with loving remembrance.
3. *Seva* - performing your duties and serving others, seeing that God resides in them.
4. *Sadvyavhar* - good behaviour and dealing with others politely, honestly and respectfully.
5. *Sanyam* - self control - the art of resisting evil and bad habits.
6. *Santosh* - contentment. Be contented with what you have; not to have the habit of hoarding or grabbing more and more.

If you have these six, you will have a very peaceful and blissful life.

Once already placed in this world, how to conduct oneself.

To live in the world or to leave it depends upon the Will of God. Therefore, work and leave everything to Ram. What else can you do? Another way is surrender everything to Him, resign yourself to Him and then there will be no more trouble for you. Thus, you will come to know that everything is done by His Will.

Means for a householder to realize God or seek God.

It is possible. It was the case with Janak, the king, a great sage. One cannot suddenly become Janak. He spent many years in devotional practices, in solitude away from the hustle and bustle of the world. Thus it would immensely help the men of the world if they retire into solitude, *Ekantvaas*, even for three days at a time now and then, so that God can be realized or peace can be attained. For example you can attend Sadhna Satsang, which give you opportunities for praying earnestly for true knowledge through discourses, chanting, meditation, silence and service. Even in your daily routine, if you are silent for one hour contemplating on God you can achieve a lot. Maintaining silence for one hour will help you increase your concentration, conserve your energy, and it will rejuvenate you and freshen you up to face the odds in life. Being in silence means gradually making your-self thoughtless "*Nirvichar,* and *Nishbad.*" Silence will gradually take you towards meditation and self realization which is the aim of every human being. That is why in Sadhana Satsang Pujya Swami ji Maharaj has kept two hours of silence in the daily time table.

Overcoming internal enemies such as lust, anger etc.

So long these passions are directed towards the world and its objects, they are enemies, but when they are directed towards God, they become man's best friends, for they take him to God. The desire for materialistic things must be changed into longing for God. The anger which you feel towards your fellow beings must be directed towards God for not manifesting Himself to you and so on with all other passions. The passions need not and cannot be eradicated, but they can be monitored and turned into a different channel.

Reducing attachment to sense objects.

If devotion to God increases, in the same proportion, the attachment to sense objects decreases. Chant and remember His name -Ram Ram - constantly. This alone is medicine to all diseases of the world. If you want to stop smoking, take a vow that for one week you won't smoke, then increase the time for not smoking. So gradually all the weaknesses can be over come, if we are determined and resolute in our decisions. In Hindi the term is *sadd sankalp*. Make one resolution, if not every day then in a week to remove your weaknesses one by one. If you make an effort or do *pursharth*, God's blessings will definitely be with you. He will surely help you in realizing your righteous goals. ■

साधना सत्संग

जुलाई से अक्तूबर 2013

हरिद्वार	30 जून से 3 जुलाई	रविवार से बुधवार
हरिद्वार	17 से 22 जुलाई	बुधवार से सोमवार
हरिद्वार	25 से 28 सितम्बर	बुधवार से शनिवार–केवल झाबुआ के साधकों के लिए
हरिद्वार	30 सितम्बर से 3 अक्तूबर	सोमवार से बृहस्पतिवार

खुले सत्संग

जुलाई से अक्तूबर 2013

हरिद्वार	29 जून	अपराह्न 4.30 से 5.45 तक CISF Camp, BHEL, हरिद्वार
दिल्ली	27 से 29 जुलाई	शनिवार से सोमवार
सूरत	7 से 8 सितम्बर	शनिवार से रविवार
हिसार	14 से 15 सितम्बर	शनिवार से रविवार, समाप्ति प्रातः 9.30 बजे
गुरदासपुर	20 से 22 सितम्बर	शुक्रवार से रविवार

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली नाम दीक्षा की तिथियाँ

जुलाई से दिसम्बर 2013

22 जुलाई	सोमवार गुरुपूर्णिमा	अपराह्न 4.00 बजे
18 अगस्त	रविवार	प्रातः 10.30 बजे
29 सितम्बर	रविवार	प्रातः 10.30 बजे
13 अक्तूबर	रविवार	प्रातः 10.30 बजे
24 नवम्बर	रविवार	प्रातः 11.00 बजे
29 दिसम्बर	रविवार	प्रातः 11.00 बजे

अन्य स्थानों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ

जुलाई से दिसम्बर 2013

30 जून	रविवार	श्रीरामशरणम् हरिद्वार, प्रातः 11.00 बजे
7 जुलाई	रविवार	श्रीरामशरणम् जम्मू
1 सितम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् जालन्धर
8 सितम्बर	रविवार	खुले सत्संग के स्थान पर सूरत
15 सितम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् हिसार, प्रातः 9.30 बजे
15 सितम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् हरदा, अपराह्न 4.30 बजे
22 सितम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् गुरदासपुर
22 अक्तूबर	रविवार	श्रीरामशरणम् जम्मू
10 नवम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् झाबुआ
17 नवम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् फाज़लपुर
1 दिसम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् ज्वाली
9 दिसम्बर	सोमवार	श्रीरामशरणम् उज्जैन
15 दिसम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् होशंगाबाद

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अप्रैल से जून 2013

उद्घाटन

फरीदाबाद, हरियाणा, में 25 मई को श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ। अत्याधिक गर्मी के बावजूद 6000 व्यक्ति सत्संग में शामिल हुए। 190 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

मोगा, पंजाब, में 1 जून को नवीनीकृत श्रीरामशरणम् में नए स्थापित श्री अधिष्ठान जी का अनावरण हुआ। 59 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।।

इन्दौरा, हिमाचल प्रदेश, में 2 जून को श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ। लगभग 7000 व्यक्ति सत्संग में शामिल हुए। 545 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

रोहतक, हरियाणा, में 6 से 7 अप्रैल तक खुला सत्संग हुआ और 458 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रतनगढ़, राजस्थान, में 28 अप्रैल को सत्संग हुआ। सत्संग के पश्चात 3041 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सिडनी, आस्ट्रेलिया, में 4 से 5 मई तक खुला सत्संग हुआ और 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

शिमला, हिमाचल प्रदेश, में 26 मई को सत्संग हुआ और सत्संग के पश्चात् 17 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

मण्डी, हिमाचल प्रदेश, में 9 जून को सत्संग हुआ। 89 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

मनाली, हिमाचल प्रदेश, में 15 से 16 जून तक खुला सत्संग हुआ। 600 व्यक्ति सत्संग में शामिल हुए। 86 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

गुरुकुलम, **सेलर्सबर्ग**, अमेरिका, में 27 से 29 जून को खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है।

दिल्ली में अप्रैल में 99 व्यक्तियों ने और मई में 76 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

2 जुलाई को होने वाले विशेष कार्यक्रम

दिल्ली श्रीरामशरणम् में परम पूजनीय महाराज जी के प्रथम महानिर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में प्रातः 6 से 7 पुष्पांजलि का कार्यक्रम होगा, तत्पश्चात 7 बजे श्री अमृतवाणी पाठ के बाद ध्यान व अखण्ड जाप प्रारम्भ होगा। जाप की पूर्ति सांय 7 बजे श्री सुन्दरकाण्ड पाठ व भजन कीर्तन के साथ होगी।

झाबुआ श्रीरामशरणम् में 2 एवं 3 जुलाई को विशेष सत्संग होगा।

इसी प्रकार विभिन्न श्रीरामशरणम् में इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम रखे गए हैं।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़, राजस्थान, में श्रीरामशरणम् के लिए भूमि अधिग्रहण कर ली गई है। भवन निर्माण की योजना तैयार हो रही है।

नरोट मेहरा, पंजाब, में निर्माण कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ होगा।

जबलपुर, मध्यप्रदेश, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य चल रहा है और लैंटर डाल दिया गया है।

रतनगढ़, राजस्थान, में साधकों के ठहरने के लिए दो मंजिला भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

Report on Open Satsang, Sydney 4 & 5 May 2013

Karya Me Parmatman, Ho Tu Aap Sahay
Apne Aashish Dijiye, Mangal Haath Badhaay

Sadhaks from Sydney, Melbourne, Brisbane, Cairns, Fiji, India and Singapore attended the first ever Open Satsang held at Shree Ram Sharnam, Syndey, from 4 to 5 May 2013. The Satsang was a great success. Despite the fact that for most sadhaks it was the first satsang they were attending of this kind, where they had to adhere to satsang discipline over two full days, discipline was maintained throughout. Each session was filled with the Divine Presence of our beloved Gurus. Children as young as seven years sang bhajans and attended each session silently.

All the sittings of the Satsang showed the enthusiasm of Sadhaks, but what stood out was the decorum and discipline maintained during *Maun* when there used to be pin-drop silence. Gurudev propelled an unexplainable energy in sadhaks of all ages and this was depicted by a ten year old child singing *'Gurudev charan kamlon mein'* alongside a sixty year old sadhak preparing lunch for all. The synchronization of bhajans sung by sadhaks with the parvachans of Pujaniya Maharaj ji's was remarkable. Meals were prepared by the sadhaks themselves. Each one was eager to provide sewa.

Of thirty seven people who received diksha, seven sat in for the second time. They expressed their gratitude and all of them said that this divine experience helped them to be more focused. A newly dikshit sadhak cried with joy: 'I have found what I had been searching for.' Another grateful sadhak said he had received a 'bundle of wealth.' 'The auspicious open Satsang was blessed by our Gurujans by their presence,' said sadhaks. A five and half year old child later exclaimed in his own way: 'I saw Guru Baba. He was invisible but I saw his feet. He came into the mandir and to the harmonium.' This experience occurred during the last bhajan which was *Ram Ras Barso Ri*.

The resonance and the vibrations of Satsang can be felt in the Satsang premises till today. The open Satsang concluded with questions – 'When are we going to have another one? Can we have this program twice a year?' All sadhaks are now eager to organise more open Satsangs with the objective '*Vridhi Aastik Bhaav Ki Shubh Mangal Sanchaar, Abhyuday Sadd-Dharam Ka Ram Naam Vistaar.*'

Namo Namaha Shree Ram Tujh Ko Namo Namaha
Namo Namaha Maharaj Tum Ko Namo Namaha
Namo Namha Guru Dev Tum Ko Namo Namaha ■

श्रीरामशरणम् झाबुआ के बारे में समाचार

चैत्र नवरात्रि का असर : युवाओं में जागी अध्यात्म के प्रति रुचि, श्रीरामशरणम सत्संग भवन पर कर रहे साधना

Nai duniya
18.04.2013

हाथों में मोबाइल व माउस के बजाय माला

झाबुआ। इन दिनों चैत्र नवरात्रि में 14 से 25 वर्ष आयु के 70 युवा युवक-युवतियां झाबुआ के श्रीरामशरणम सत्संग भवन में रहकर कठोर साधना कर रहे हैं। 10 अप्रैल को ही वे यहां आ गए थे और 19 को वापस लौट जाएंगे। सांसारिक दुनिया के परिवेश से एकदम अलग माहौल में ये युवा साधक अपने आप को ढाल चुके हैं और उन्हें अत्यंत ही आनंद की अनुभूति हो रही है। अब उनके हाथों में मोबाइल व कम्प्यूटर माउस के बजाय माला है और होठों पर फिल्मी गीत की जगह रामनाम चढ़ चुका है।

इस वर्ष 8 से 10 फरवरी के बीच हुए दीक्षा कार्यक्रम में अब तक सर्वाधिक 15 हजार 453 लोगों ने रामनाम की दीक्षा ली थी और उनमें 60 प्रतिशत युवा थे। युवाओं में अध्यात्म के प्रति रुचि जागृत होना अच्छे संकेत हैं। चैत्र नवरात्रि के लिए भी श्रीरामशरणम में ही लगातार नौ दिनों तक रहकर कठोर साधना करने के लिए आगे आने वाले 109 में से 70 साधक 14 से 25 वर्ष आयु समूह के हैं। -निप्र

बनना है अच्छे नागरिक

सत्संग संचालक आनंद विजयसिंह सक्तावत का कहना है कि सत्संग भवन में रहकर साधना करवाने का उद्देश्य स्वर्ग प्राप्ति नहीं करवाना है, बल्कि अच्छे नागरिक तैयार करना है। जब जीवन में अध्यात्म प्रवेश कर जाता है तो राष्ट्र के भी कल्याण की ही सोच उभरती है और सारा वातावरण मंगलमय हो जाता है। साधना के साथ सेवा करने की शिक्षा भी युवाओं को दी जा रही है। इतनी बड़ी संख्या मे युवा साधकों का आगे आना समाज के लिए अच्छा संकेत है।

झाबुआ के सत्संग भवन में साधना कर रहे युवा साधक।

सवा लाख का परिवार

- वर्तमान में सवा लाख लोग रामनाम की दीक्षा ले चुके हैं।
- वर्ष 1994 में मात्र 5 हजार लोग जुड़े थे।
- इसके बाद डॉ. विश्वमित्र महाराज के हर वर्ष झाबुआ आने पर दीक्षाधारियों की संख्या बढ़ती चली गई।
- वर्ष 2006 में भक्तों की भावना व श्रम के बल पर विशाल सत्संग भवन खड़ा हो गया।
- भवन 15 हजार वर्गफुट में बना हुआ है।
- भवन में 27 हॉल हैं।
- यहां नियमित आध्यात्मिक गतिविधियां संचालित होती हैं।
- झाबुआ जैसा सत्संग भवन अन्य किसी स्थान पर नहीं है।
- श्रीरामशरणम का मुख्य केंद्र दिल्ली में है।
- सत्यानंदजी महाराज, प्रेमजी महाराज व डॉ. विश्वमित्रजी महाराज समर्थ गुरु हैं।
- तीनों सद्गुरु देह छोड़ चुके हैं।

रामनाम में लीन हैं युवा

स्मृति भट्ट

- बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा स्मृति भट्ट का कहना है कि रामायण पाठ और रामनाम का जाप करते हुए वे साधना करने में लगी हुई हैं। ऐसे में घर-परिवार की बिल्कुल भी याद नहीं आती और न ही टीवी, मोबाइल या इंटरनेट की तरफ ध्यान जाता है।

मोहितकुमार

- इंजीनियरिंग के छात्र मोहितकुमार चौहान का कहना है कि यहां रहकर साधना करने में आनंद की अनुभूति हो रही है। भोग की सांसारिक वस्तुएं थोड़ी देर के लिए सुख देती हैं, किंतु इनसे शांति नहीं मिल पाती। रामनाम लेने से मन पवित्र हो गया है। यहां बहुत शांति है।

आरती राठौर

- छात्रा आरती राठौर का मानना है कि अध्यात्म मे जितना डूबो, उतना ही कम है। यहां रहकर एक अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा मिली है और आगे जीवन में खूब शांति व आनंद इस रास्ते पर चलकर मिलेंगे, ऐसा विश्वास है।

अजय परमार

- आईटीआई के छात्र अजय परमार को साधना करने से काफी शांति मिल रही है। वे कहते हैं कि प्रभु का नाम सच्चे मन से लेने में ही बेड़ा पार हो जाता है। सांसारिक दुनिया के परिवेश से एकदम अलग हटकर माहौल सत्संग भवन में मिल रहा है।

देर शाम तक इस तरह रहती है दिनचर्या

अलसुबह 4 बजे जागना होता है, 5.30 बजे चाय, 7 से 8.30 बजे तक रामायण पाठ, 8.40 बजे नाश्ता, 10 से 11 बजे तक सत्संग हॉल में जाप, 11.30 बजे भोजन (जिसमें मात्र दो चपाती, दाल-चावल व एक सब्जी दी जाती है), दोपहर 1 से 3 बजे तक मौन, 3.30 से 4.30 बजे तक जाप, 4.40 बजे चाय, शाम 7 से रात्रि 8.30 बजे तक रामायण पाठ, 8.40 बजे भोजन और 10 बजे सोना अनिवार्य है। इसके अलावा प्रतिदिन अमृतवाणी पाठ अनिवार्य रूप से साधकों को करना होता है और माला करते हुए अधिक से अधिक रामनाम के जाप करने का भी साधकगण संकल्प लेते हैं।

होती है साधना

- साधकों के लिए पूरे नौ दिनों तक परिसर से बाहर आना वर्जित है।
- सत्संग भवन में मोबाइल वर्जित है।
- सांसारिक दुनिया से एकदम कटकर रहना पड़ता है।
- अनुशासन व दिनचर्या का पालन करना साधकों के लिए अनिवार्य है।
- भोजन शुद्ध, सात्विक व अल्प मात्रा में मिलता है।
- साधना के दौरान केवल रामनाम में ही मन लगाना होता है।

अनुभूतियाँ

'गुरु तत्व है, गुरु शरीर नहीं'

22 जनवरी, 1997 को श्रीरामशरणम् गाँव फाजलपुर (कपूरथला) का शिलान्यास रखा गया। परम पूज्य श्री महाराज जी की इच्छा थी कि यहाँ पर पंजाब का एक केन्द्र बनाया जाये। 27 फरवरी 2002 को विधिवत् उद्घाटन परम पूजनीय श्री महाराज जी के कर कमलों से हुआ। दिन बीतते गये पर यहाँ कोई साधना सत्संग या खुला सत्संग न लग सका।

सितम्बर 2011 को परम पूजनीय श्री महाराज जी जब गुरदासपुर से खुले सत्संग के पश्चात यहाँ कपूरथला रहे थे और परम पूजनीय श्री महाराज जी ने हमारी प्रार्थना स्वीकार करते हुऐ वचन दिया कि वे कपूरथला हर साल कुछ दिनों के लिए आया करेंगे।

इस तरह वर्ष 2012 में सितम्बर या नवम्बर में परम पूजनीय श्री महाराज जी का कपूरथला में आना बनता था। जैसी राम इच्छा, 2 जुलाई 2012 को परम पूजनीय श्री महाराज जी ने अपना भौतिक चोला त्याग दिया। 4 सितम्बर 2012, मंगलवार, दिल्ली से कुछ साधक परम पूजनीय श्री महाराज जी के चित्र को श्रीरामशरणम् गाँव फाजलपुर, कपूरथला में स्थापित करने के लिए आए। श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट के जो सदस्य थे, उन्होंने यहाँ की जगह और वातावरण देखकर कहा कि इस जगह को प्रयोग करो–खुले सत्संग का विचार किया पर कुछ कारणों से बात आगे बढ़ न सकी।कुछ समय पश्चात् सेवक को रामायणी सत्संग हरिद्वार में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ, जो 15 से 24 अक्तूबर तक लगना था। सत्संग बहुत सुचारु रुप से चल रहा था। 21-22 अक्तूबर की रात करीब 2.30-3.00 बजे का समय था, सेवक जाप वाले कमरे में जाप कर रहा था। परम पूजनीय श्री महाराज जी आए और हिला कर कहा,''आपने मुझे कपूरथला आने को कहा ही नहीं''। मैं एकदम घबरा गया, साथ यह भी संकेत दिया कि अमुक साधक को कहना,''सुबह दुर्गा अष्टमी है और माता का भजन गाना है, जो हर साल दुर्गा अष्टमी पर बोला जाता है''। मेरी आँखों से टप–टप आँसू बहने लगे। प्रातः 4 बजे जब जागरण की घंटी बजी तब मैं जाप के कमरे से बाहर निकला और माता का भजन गाने वाले साधक को बाहर खड़ा पाया। उसे परम पूज्य श्री महाराज जी ने जो संकेत दिया था, बता दिया।

मेरा मन बड़ा विचलित था, मैंने वरिष्ठ साधकों से इस अनुभूति की चर्चा की तो मुझे कहा गया कि आप एक दिन का खुला सत्संग कपूरथला में लगाएं। 23 दिसम्बर 2012 को यहाँ पर खुला सत्संग लगाया गया। प्रातः ओस पड़ रही थी, गहरी धुंध थी प्रभु कृपा ऐसी हुई कि तांता लग गया। दूर–दूर से साधक खराब मौसम के होते हुए भी आ गए। 723 साधक यहाँ सत्संग में शामिल हुए। इतना अनुशासन, इतनी साधना, इतनी सेवा – हर साधक यही कह रहा था कि परम पूज्य श्री महाराज जी यहाँ साक्षात विराजमान हैं। हर समय उनकी प्रेरणा ही यहाँ काम करवा रही है, पग–पग पर हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

मत सोचो कि परम पूजनीय श्री महाराज जी हमसे दूर चले गए हैं। परम पूजनीय श्री महाराज जी हमारे अंग–संग हैं, उन्हीं के आशीर्वाद से सब काम हो रहे हैं। परम पूजनीय श्री महाराज जी कहते हैं कि ''गुरु भाव होना चाहिए, गुरु तत्व है, गुरु शरीर नहीं – गुरु जी को करिए वन्दना, भाव से बारम्बार।''

इस भाव में रहेंगे तो परम पूजनीय श्री महाराज जी को हर पल, हर क्षण, अपने साथ पाएंगे। ■

'गुरु कृपा'

मेरी बड़ी बेटी बड़ी होशियार है शुरु से ही 'स्कालर बैच' मिलता रहा है। एक साल पहले वह एम.सी.ए कर रही थी, अंतिम साल था, 'प्लेसमैंट' के लिए कंपनियां कैम्पस में आ रही थीं। तीन कंपनियों में लिखित टैस्ट पास होने के बाद भी, बात आगे नहीं बढ़ी। इसलिए बहुत हताश थे हम सभी। मुझे याद है उस दिन मंगलवार का जाप था और उसको ईंटरव्यू के दूसरे दौर के लिए एक बहुत बड़ी कंपनी ने बुलाया था। मैं करीब 6 बजे हॉल के बाहर महिलाओं की तरफ बैठी जाप कर रही थी और बच्ची के चयन के लिए प्रार्थना भी कर रही थी। अचानक लगा कि श्री अधिष्ठान जी मेरे समक्ष आ गए हैं, उनमें से बहुत तीव्र प्रकाश निकल रहा है, इतना तीव्र कि आँखें ही नहीं खुल रही; वह पवित्र प्रकाश इतना शीतल था कि सितम्बर की हुमस वाली गर्मी भी नहीं लग रही थी। मन तन शान्त हो गया। मन में विश्वास हो गया कि प्रार्थना सुन ली गई है और आज बच्ची को सफलता जरुर मिलेगी और ऐसा ही हुआ। ■

'गुरु दर्शन'

आज का दिन मेरे जीवन का बड़ा ही रोमान्चित और भाग्यशाली है। मुझे सोए हुए अभी सवा घण्टा हुआ था कि मेरे परम प्यारे परब्रह्म परमेश्वर श्री सद्गुरु देव जी मेरे सामने प्रकट हुए और बड़े स्नेह से मुझे निहारा, तभी मैंने अपने दोनों हाथों में पीले रंग की मिठाई, जिसे हम अपनी भाषा में "बेसन" कहते हैं, सद्गुरुदेव जी को भोग लगाने हेतु उठाई। मेरे परम प्यारे सद्गुरुदेव जी ने मेरे दोनों हाथों को जिनमें भोग रखा था ऊपर उठाया और भोग अपने मुखारविन्द में डाल लिया और प्रसन्न मुद्रा से मुझे निहारते रहे । मैं उनकी तरफ और वे मेरी तरफ देखकर आनन्दित हो रहे थे। मन्द–मन्द मुस्कुराते हुए कह रहे थे, "कल मैं तुम्हारे हाथ से भोजन भी खाऊँगा–खिलाओगे न?" यह सुनकर मैं परम पूज्य श्री महाराज जी के पवित्र श्री चरणकमलों में दण्डवत प्रणाम करते हुए कृतज्ञता प्रकट करने लगा। मेरा सीस व मुख श्री सत्गुरुदेव जी के चरणार्विन्द से जुड़ गया तथा नेत्रों से झर–झर नीर झरने लगा, जिससे मेरा मुख भीग चुका था। मैं श्री गुरु चरण सरोज रज पाने को तड़प–तड़प कर गुरु चरणार्विन्द से लिपट रहा था। ज्यों ही श्री गुरुदेव जी मुझे ऊपर उठाने को झुके, मेरी आँख खुल गई।

मैंने समय देखा सवा ग्यारह हो रहे थे, मैंने शीघ्र आँखें बंद कीं और प्यारे सद्गुरु देव जी को मन ही मन भावनापूर्वक प्रणाम किया और हो गया शुरु मानसिक जाप। मन बार–बार बीते पलों को फिर पलकों में कैद करने का यत्न कर रहा था। क्या ही अच्छा होता मैं अपने आपको फिर से श्री गुरुदेव जी के कोमल चरणों में लिपटा पाता, परन्तु वह पल अंधेरे में ऐसे खोए कि मुझे भी उस लपेट में शीघ्र ही ले लिया।

सुना था कभी कृष्ण बन कर सुदामा के तन्दुलों को बड़े प्रेम से भोग लगाते थे, कभी साग विदुर घर खाते थे तो कभी राम बन कर गरीब भिलनी के झूठे बेरों का भोग लगाते थे। आज आपने मेरे भोग को प्रेमपूर्वक स्वीकार किया।

मैं अपनी अज्ञानतावश परम पूजनीय श्री महाराज जी से यह नहीं पूछ सका कि आप कल के भोजन में कौन से पदार्थ का भोग लगायेंगे और वह कल कब आयेगा। इस उत्तर का मुझे इन्तज़ार रहेगा। यदि ऐसा शुभ अवसर इस साधक के जीवन में प्रत्यक्ष रुप में प्राप्त हो जाए तो यह साधक धन्य हो जायेगा। ■

'Everything Depends on the Will of Ram'

Pujaniya Maharaj ji loved telling this story, which Shree Ramkrishna Paramhansa often used to narrate to householders.

Once in a village, there lived a weaver. He was a very spiritual and simple human being. Everyone trusted and loved him. The weaver used to go to the market to sell his cloth. If the customer asked the price of the cloth, he would say: 'By the will of Ram the thread cost one rupee, by the will of Ram labour cost four annas, by the will of Ram the profit is 2 annas, by the will of Ram the price of the cloth thus amounts to one rupee and six annas.' People had so much confidence in him that they would immediately pay the price and take the cloth. The weaver was a true devotee. At night he used to meditate for a long time and also chant HIS holy name.

One night he could not sleep. He sat, meditating alone in his courtyard. A gang of robbers were passing that way. They were very tired carrying their stolen goods. They dragged him away with them. Then, they broke in to another house and piled some of the stolen goods on the poor weaver's head. At this moment the watchman came up and the robbers ran away. The honest weaver with his load was caught. He was detained for the night. Next morning he was brought before the judge. The people of the village, hearing what had happened came to see the weaver. They all told the judge: 'This man can never steal anything.' The judge then asked the weaver to narrate what had happened. The weaver said: 'My Lord, by the will of Ram I was sitting in the courtyard late at night. I, by the will of Ram was meditating on God and repeating His holy name, when by the will of Ram a band of robbers passed that way and by the will of Ram they dragged me away with them. By the will of Ram they broke into a house. By the will of Ram they piled a load on my head, then by the will of Ram the watchman came and by the will of Ram I was caught. Then, by the will of Ram I was kept in prison and, this morning, the will of Ram has brought me before your Lordship.' The judge seeing the innocence and spirituality of the man ordered his release. Upon coming out of the court, the weaver said to his friends: 'by the will of Ram I am released.'

Whether you live in the world or renounce it everything depends upon the will of Ram. Leaving everything to God do your duty in the world. ■

Quiz from Shree Ramayan ji

1. Name three ancestors of Ram ji.
2. On which day of the Indian calendar was Ram ji born ?
3. Name the king who arranged the boat for Ram ji, Lakshman ji and Maa Sita ?
4. Mention the name of the sadhvi who had turned into stone ?
5. What are the names of the three ladies who played a negative role in the Ramayan ?
6. Which sage had named the four sons of Dashrath ?
7. With whom did Ram & Lakshman reach Mithila ?
8. What are the names of the other three sisters of Maa Sita ?
9. What is the name of the two sages whom Ram ji met when he was exiled in the forest ?
10. Name the herb which Hanuman ji was asked to bring to make Lakshman ji conscious ?
11. Give two other names of Hanuman ji ?
12. What is the name of the bird for whom Ram ji performed the last rites ?
13. Who was the Asura who became a deer to allure Maa Sita ?
14. Which was the place from where Maa Sita was kidnapped ?
15. What is the name of the aeroplane in which Ram ji, Lakshman ji & Maa Sita returned to Ayodhya after 14 years ?

■ **Answers**

1. Dilip, Bhagirath, Sagar, Ambrish, Yayati, Kakutsth, Nahush, Aji etc.
2. Chetra Navmi of Shukla Paksh.
3. Nishad Raj or Guha.
4. Ahilya.
5. Manthra, Kaikayi, Shrupnakha.
6. Maharishi Vasistha.
7. Maharishi Vishvamitra or Kaushik Muni.
8. Urmila, Mandavi, Shrutkirti.
9. Bhardwaj, Suteekshna, Agast.
10. Sanjeevani.
11. Maruti, Pawanputra, Hanumat, Hanumanta, Anjna-Sut, Sankatmochak.
12. Jatayu- Geedraj Jatayu.
13. Maarich.
14. Panchvati.
15. Pushpak Viman.

Hope you enjoyed this issue of Satya Sahitya. After reading it, if you do not wish to preserve this copy, please take care to return it to your local centre or the nearest Shree Ramsharnam.

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

Shree Ramsharnam, 8A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024.
©Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, New Delhi.
Email: shreeramsharnam@gmail.com; shreeramsharnam@hotmail.com
Website: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".

Price ₹ 5